राग–रस का आध्यात्मिक प्रभाव

दयालबाग़ एजुकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड यूनिवर्सिटी)
दयालबाग़ आगरा की संगीत विषय की पी–एच.डी.
उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध प्रबन्ध की
'रूपरेखा'

सन् – 2015

प्रो. सुभद्रा कुमारो सत्संगी शुभकीर्ति त्रिपाठी

निर्देशिका शोधार्थी

अध्यक्षा संगीत विभाग संगीत विभाग

प्रो. रागिनी रॉय
कला संकाय प्रमुख

(संगीत विभाग – कला संकाय)
दयालबाग़ एजुकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड यूनिवर्सिटी)
दयालबाग़ आगरा – 282005

भूमिका

चैतन्य सर्वभूतानां विवृतं जगदात्मना।
नादब्रह्म तदानन्दमद्वितीयमुपास्महे।।
नादोपासनया देवा ब्रह्मविष्णुमहेश्वराः।
भवन्त्युपासिता नूनं यस्मादेते तदात्मकाः।।

(संगीत रत्नाकर)

संगीत रत्नाकर के प्रारंभ में ही 'शारंगदेव' ने मंगलाचरण में 'नाद तरंग' के रूप में भगवान शंकर की आराधना की है। नादब्रह्म की उपासना के रूप में कहा गया है, कि जो समस्त प्राणियों में चैतन्य तथा जो जगत के रूप में विवृत हुआ है, उस अद्वितीय नादब्रह्म की हम उपासना करत हैं। नाद की महिमा सर्वोपरि तथा सर्वजन स्वीकृत है। गीत, वाद्य, नृत्य तीनों को नाद के अधीन मानने की अवधारणा 'संगीत रत्नाकर' से प्राप्त है।

योग की भांति संगीत भी एक उपास्य विद्या है। संसार में एकमात्र चैतन्य ही व्याप्त है, अतः सांसारिक पदार्थ जड़ होते हुए भी उनकी व्यावहारिक सत्त को स्वीकार किया गया है।

'नाद' निर्गुण ब्रह्म का ही सगुण रूप है। प्रणव या नाद की उपासना से ब्रह्मसाक्षात्कार संभव है। 'शब्द' को आकाश का गुण बताकर उसे आकाश के तुल्य ही व्यापक माना गया है। अतः नाद का अर्थ अव्यक्त ध्वनि है।

वर्ण, पद, वाक्य, स्वर ये सब 'अव्यक्त ध्वनि' के ही व्यक्तरूप हैं। 'नाद' (ध्वनि) की निष्पत्ति दो तत्वों के संयोग से हुयी है, आहत और अनाहत भेद से नाद को द्विविध कहा गया है।

योगसाधना करने वाला योगी 'अनाहत–नाद' में तल्लीन होकर ब्रह्मानन्द का अनुभव करता है, और संगीत साधना करने वाला योगी 'आहत–नाद' में 'ब्रह्मानन्द' का अनुभव करता है। अनाहत नाद की साधना अत्यन्त कठिन है, इसलिए गायक योगियों ने 'आहत–नाद' का आश्रय लिया।

समग्र ज्ञान वाक् से अनुविद्ध है, और ज्ञान वाक् से प्रकाशित है। यदि कोई भी ज्ञान वाक् के रूप में प्रकाशित न हो तो अभिज्ञान की स्थिति तक नहीं आ सकता।

आहत और अनाहत नाद की ध्वनि दोनों ही 'पिण्ड' में प्रकट होती है, सजीव पिण्ड अर्थात् मनुष्य शरीर में आहत और अनाहत ध्वनियाँ सदैव विद्यमान रहती हैं, परन्तु निर्जीव पिण्ड अर्थात् वाद्यादि में आहत नाद अभिव्यक्त होता है। जो ध्वनि संगीतोपयोगी हो, तथा आघात द्वारा उत्पन्न हो, वह आहत नाद कहलाती है।

इन ध्वनियों में भी वह ध्वनि, जो गीत में प्रयोग की जा सके, और एक–दूसरे से अलग एवं स्पष्ट पहचानी जा सके, वह भारतीय संगीत में श्रुति कहलाती है। शारंगदेव के अनुसार हमारे हृदय की ऊर्ध्वनाड़ी में संलग्न तिरछी 22 नाड़ियों पर वायु का आघात होने से 22 ध्वनियाँ उच्च–उच्चतर रूप में उत्पन्न होती है, इन 22 ध्वनियों पर ही सात स्वर स्थापित होते हैं। स्वर ही संगीत का प्राण है, संगीत जगत में स्वर ही व्यष्टि चेतना का प्रतीक है।

"स्वतो रंजयति जन चित्तानाम् स स्वरो उच्यते"

(संगीत रत्नाकर)

अर्थात् स्वर स्वतः प्रतिष्ठित है, जन चित्तरंजन में स्वतः लिप्त है। जो निश्चित श्रुति स्थान पर रहते हुए भी अपन जगह से ऊपर या नीचे हटने पर विकृत होता हो और आत्मा के सुखः दुखादि संवेदनाओं की अभिव्यक्ति में सहायक हो, स्वर कहलाता है। स्वर से राग की उत्पत्ति होती है। राग उपासना मन से सम्बद्ध है। रागनादोपासना है, प्रत्येक राग का नादमय रूप है, साथ–साथ उसका भाव रूप भी है, राग के प्रत्येक स्वर में राग की प्रकृति ओत–प्रोत हो जाती है, तब उसके नादमय रूप में राग के प्राण झंकृत हो उठते हैं।

योऽसौ ध्वनिविशेषस्तु स्वर वर्ण विभूषितः।

रंजको जनचित्तनां स रागः कथितो बुधैः।।

(मतंगकृत बृहद्देशी)

संगीतविद् मतंग के अनुसार 'स्वर और वर्ण से अलंकृत उस ध्वनि–विशेष को बुद्धिमान पुरूषों द्वारा 'राग' कहा गया है, जो जन–चित्त को रंग देती है।

राग शब्द की उत्पत्ति संस्कृत शब्द 'रंज' से है, जिसका अर्थ है, रंगना। भारतीय दर्शन, साहित्य और संगीत में 'राग' का एक विशिष्ट स्थान है। चित्त का किसी वृत्ति–विशेष अथवा अवस्था विशेष में अधिष्ठान ही रंगना कहलाता है। संगीत में वह स्वर समूह, जिसमें चित्त को रंग देने की शक्ति हो, वह राग कहलाता है। राग चित्त को आहलादित कर रस से ओत–प्रोत कर देता है। राग का श्रवण करने

वाले श्रोताओं का जब कलाकार से तादात्म्य स्थापित हो जाता है, तब रस की प्रतीति होती है। सुनने वाले का चित्त आनंद की चरमावस्था को प्राप्त होता है।

राग के सौन्दर्याकर्षण से चेतन व अचेतन दोनों प्रकार के प्राणी मंत्र मुग्ध हो जाते हैं। राग भारतीय संगीत की आत्मा है, राग और रस का घनिष्ठ सम्बन्ध है।

रस शब्द की व्युत्पत्ति है, **"रस्यते इति रसः"** अर्थात् जिसका स्वाद ले सकें, चख सकें, रस की अनुभूति कर सकें, वही रस है। मानव के अंतःकरण में निवास करने वाली विशिष्ट भावनाओं के चरमोत्कर्ष को शास्त्रकारों ने रस कहा है, अर्थात् जब कोई स्वाभाविक वस्तु अपनी चरम सीमा पर पहुँचकर मन में असाधारण नवीनता पैदा कर दे, उसे रस कहते हैं।

नाट्यशास्त्र के प्रणेता भरतमुनि के अनुसार – **विभाव, अनुभाव तथा व्याभिचारी (संचारी) भावों के संयोग से रस की निष्पत्ति होती है।** अनेकानेक भावों के मिश्रण से स्थायी भाव रस तत्त्व में परिणित हो जाते हैं रसिक हृदय उन रसों का अनुभव करता है। रस का सम्बन्ध मानवीय भावों से है, इनमें हर्ष, विषद, प्रेम, घृणा, वात्सल्य, शौर्य, दया आदि प्रमुख हैं, ये सब स्थायी भाव हैं। भावों के द्वारा रस की उत्पत्ति होती है।

राग द्वारा रस की अनुभूति विभिन्न तत्त्वों द्वारा संभव है –

- स्वर की प्रकृति (कोमल, तीव्र स्वर)
- स्वर लगाव
- स्वर–संयोजन (स्वर समूह)

- राग प्रस्तुति के गौण माध्यम (लय, बोल, बंदिश)

हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत में मुख्यतः श्रृंगार, करूण, वीर और शान्त रसों का समावेश होता है। संगीत का प्रत्येक राग भी किसी न किसी रस से सम्बन्धित माना गया है।

स्वरों के लगाव का ढंग जैसे विभिन्न रागों में एक ही स्वर को अलग–अलग ढंग से व्यक्त करते हैं, अर्थात्, श्रुतियों के स्थान बदलने से ही रस परिवर्तित हो जाता है।

सभी रागों का अपना अलग–अलग रस माना गया है, ये कलाकार पर भी निर्भर करता है, कि वह अपनी कलात्मक प्रतिभा से दो स्वरों को प्रत्येक राग में अलग–अलग ढंग से प्रस्तुत करता है, जिससे राग का भाव व रंग ही परिवर्तित हो जाता है। हिन्दुस्तानी संगीत में रागों का समय सिद्धान्त भी रसानुभूति के वातावरण को उत्पन्न करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। जैसे – प्रातः काल में भैरव राग का गायन प्रभावशाली वातावरण का सृजन करते हुए, एक आत्मिक मानसिक शांति की अनुभूति कराता है।

"भाषा भले ही कभी–कभी मनोभावों को अभिव्यक्त करने में असमर्थ हो जाये, पर नाद कभी असफल नहीं होता।

(आचार्य कैलाशचन्द्र देव बृहस्पति)

स्वर रूपी नाद में इतना प्रभाव होता है, कि यह बुझे दीपक को जला देने की, वर्षा करा देने की और बीमार व्यक्ति को स्वस्थ करने की शक्ति रखता है। राग गायन आध्यात्मिकता को पुष्ट करता है।

यतोऽभ्युदय निःश्रेयससिद्धिः स धर्मः।

(वैशोषिक सूत्र कणादि)

अर्थात् जिससे लौकिक जीवन में उन्नति तथा मोक्ष की प्राप्ति हो, वह धर्म है। संगीत व धर्म का गूढ़ सम्बन्ध है। संगीत द्वारा आत्मा को रसतृप्ति होती है और धर्म आत्मा के विकास में सहायक है। दोनों के माध्यम से हमें ईश्वर प्राप्ति संभव है।

शारंगदेव ने 'संगीत–रत्नाकर' ग्रन्थ में संगीत को धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष प्राप्त करने का सुलभ साधन वर्णित किया है। प्राचीन युग से ही ईश–स्तुति में संगीत का महत्त्वपूर्ण स्थान रहा है। यदि हम आध्यात्मिक रूप से दृष्टि डालें, तो भक्ति संगीत की मधुर ध्वनियों के माध्यम से ही अपने हृदय के सूक्ष्मातिसूक्ष्म भावों को अपने भगवान् को अर्पण करके तन्मयी स्थिति पर पहुँच जाते है, और अपनी आत्मा को उस ईश्वर के साथ एकात्म करके ब्रह्म के पूर्णानन्द का अनुभव करने लगते हैं। भारतीय संगीत की उत्पत्ति वेदों की ऋचाओं के साथ देवमंदिर के प्रांगण में ही सर्वप्रथम हुई। साथ ही श्रोमद्भगवतगीता में उल्लिखित है – 'वेदांना सामवेदोऽस्मि" अर्थात् वेदों में संगीत–रूपी सामवेद मेरा ही स्वरूप है। संगीत का मूलाधार नाद है, जो प्राणवाचक है। अतः संगीत लौकिक अभ्युदय के साथ–साथ ही पारलौकिक कल्याण की सिद्धि का भी साधन है।

सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण

शोधार्थी की विशेष रूचि राग–रस व उसके आध्यात्मिक प्रभाव में है, अतः शोधार्थी ने विषय के चयन हेतु निम्नलिखित बिंदुओं से सम्बन्धित शोध व सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण किया –

- संगीत व राग
- संगीत व रस
- संगीत व आध्यात्मिक प्रभाव

शोध प्रबंध से सम्बन्धित ग्रन्थ

1. डॉ. रिचा वर्मा ने Concept of Raga : A Philosophical Analysis विषय पर सन् 1996 में दिल्ली विश्वविद्यालय से शोध कार्य सम्पन्न किया।
2. डॉ. कविता सूद ने 'उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में निहित रसात्मकता का सौन्दर्य शास्त्रीय विवेचन' विषय पर सन् 2003 में दिल्ली विश्वविद्यालय से शोध कार्य सम्पन्न किया।
3. डॉ. साची शुक्ला ने "हिन्दुस्तानी संगीत विच श्रृंगार रस दी अभिव्यक्ति, ध्रुपद, ख्याल, आते ठुमरी दे संदर्भ विच विषय पर सन् 2013 में पंजाबी यूनिवर्सिटी से शोध कार्य सम्पन्न किया।
4. सोनल बधावा ने 'Music Therapy an analytical study विषय पर सन् 2014 में दिल्ली विश्वविद्यालय से शोधकार्य सम्पन्न किया। इन्होंने अपने शोध प्रबंध

में बताया है, संगीत द्वारा संगीत चिकित्सा कैसे संभव है, और मानव के तंत्रिका तंत्र पर इसका प्रभाव कैसे पड़ता है?

पुस्तकें

1. शर्मा प्रो. स्वतन्त्र, सौन्दर्य रस एवं संगीत अनुभव पब्लिशिंग हाउस, सर्वोदय नगर, अल्लापुर, इलाहाबाद, प्रथम संस्करणः 2010
2. घोष डॉ. संगीता, रस तत्त्व विमर्श, प्रकाशक—पिल्ग्रिम्स पब्लिशिंग, दुर्गाकुण्ड, वाराणसी, प्रथम संस्करण—2009
3. जौहरी सीमा, संगीतायन, राधा पब्लिकेशन्स, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण – 2003
4. बावरा सिंह डॉ. जोगिन्द्र, भारतीय संगीत की उत्पत्ति एवं विकास, प्रकाशक – ए.बी.एस. पब्लिकेशन, मार्डेन, मार्केट, जालन्धर, प्रथम संस्करण – 1994
5. गर्ग डॉ. लक्ष्मीनारायण, निबन्ध संगीत, प्रकाशक – संगीत कार्यालय हाथरस (उ.प्र.) तृतीय संस्करण—मार्च 2003
6. मुसलगाँवकर डॉ. विमला, भारतीय संगीत—शास्त्र का दर्शनपरक अनुशीलन, संगीत रिसर्च अकादमी, नेताजी सुभाषचन्द्र बोस रोड, कलकत्ता, प्रथम संस्करणःजुलाई 1995 ई.
7. जैन डॉ. रेनू, स्वर और राग परिभाषिक संज्ञाओं के परिप्रेक्ष्य में, कनिष्क पब्लिशर्स, डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली प्रथम संस्करण – 2006
8. दास गुप्ता डॉ. लिपिका, संगीतशास्त्र चिन्तन, कला प्रकाशन, बी.एच.यू. वाराणसी, प्रथम संस्करणः2009

9. श्रीवास्तव पं. हरिशचन्द्र, संगीत निबन्ध सग्रह, प्रकाशक–संगीत सदन प्रकाशन, साउथ मलाका, इलाहाबाद

10. शर्मा प्रो. स्वतत्र, भारतीय संगीतः वैज्ञानिक विश्लेषण, अनुभव पब्लिशिंग हाउस, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण–2010

11. वर्मा डॉ. सतीश, संगीत चिकित्सा (एक शास्त्रीय अध्ययन) राधा पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली–110002, प्रथम संस्करण–2004

इस संदर्भ में शोधकर्त्री ने अपने विषय से सम्बन्धित प्राप्त शोध प्रबंधों द्वारा, इन्टरनेट एवं अन्य स्रोतों से, जो उसे जानकारी प्राप्त हुई है, उसका विवरण सम्बन्धित साहित्य में दिया है। इस सम्बन्धित साहित्य में प्रो. स्वतन्त्र जी ने अपनी पुस्तक **सौन्दर्य, रस एवं संगीत** में रस–सिद्धान्त, रस के अवयव, रस और संगीत के भी कुछ अध्यायों को पृष्ठ सं. 82 से 98 तक सम्मिलित किया है।

इसी प्रकार डॉ. संगीता घोष जी ने **रस तत्त्व–विमर्श** में, रस का अर्थ अर्थ–विकास, रस विधायक तत्त्व दृष्टि, सांगीतिक रस निष्पत्ति, संगीत में सौन्दर्य तत्त्व, गायन, वादन शैलियाँ और रसात्मक सौन्दर्य, ललित कलाओं की आत्मिक रस–दृष्टि को अपनी पुस्तक में अध्यायों द्वारा उल्लिखित किया है। डॉ. जोगिन्द्र सिंह बावरा जी ने भी अपनी पुस्तक **भारतीय संगीत की उत्पत्ति एवं विकास** में अध्याय संगीत के विकास में विभिन्न धर्मों का योगदान, जिसमें इन्होंने सिक्ख धर्म में संगीत, सूफी धर्म में संगीत पर पृष्ठ संख्या 27–70 तक प्रकाश डाला है।

इन सब तथ्यों से यह स्पष्ट होता है कि सम्बन्धित साहित्य में दी गयी जानकारी से, राग–रस तथा विभिन्न धर्मों में संगीत पर कार्य हुआ है, लेकिन जिस

दृष्टिकोण से शोधकर्त्री अपना शोधकार्य करना चाहती है, उस विषय पर अभो तक कोई कार्य नहीं हुआ हैं

अतः शोधकर्त्री ने अपनी जिज्ञासावश राग–रस का आध्यात्मिक प्रभाव नामक विषय का चयन किया है, जिससे उक्त विषय को पूर्ण रूप से स्पष्ट किया जा सकेगा।

विषय कथन

राग–रस का आध्यात्मिक प्रभाव

अध्ययन की उपयोगिता

इस अध्ययन के द्वारा राग और रस के घनिष्ठ सम्बन्ध की अनुभूति का अध्ययन स्पष्ट होगा साथ ही यह भी स्पष्ट होगा कि राग व रस का व्यक्तिगत आध्यात्मिक अनुभूति पर क्या प्रभाव होता है।

अध्ययन का उद्देश्य

- **मुख्य उद्देश्य**

  राग–रस व उसके आध्यात्मिक प्रभाव का अध्ययन

- **गौण उद्देश्य**

  1. राग–ध्यान परंपरा का अध्ययन।
  2. संगीत व धर्म क सम्बन्ध का अध्ययन।
  3. राग–रस व आध्यात्मिक चेतना का अध्ययन।

अध्ययन विधि

यह शोध अध्ययन, सर्वेक्षणात्मक, प्रयोगात्मक अभ्यास के द्वारा क्रियात्मक, निरीक्षण एवं प्रश्नावली विधियों के द्वारा किया जायेगा।

अध्ययन के स्रोत

शोध का अध्ययन कार्य उपलब्ध पुस्तकों, पुस्तकालयों, पत्र–पत्रिकाओं, सीडी–डीवोडी, साक्षात्कार आदि के माध्यम से प्राप्त जानकारी आदि की सहायता से पूर्ण किया जाएगा।

अध्ययन की रूपरेखा

विभिन्न स्रोतों से प्राप्त शोध अध्ययन के विषय से सम्बन्धित जानकारी को निम्नलिखित अध्यायों के रूप में किया जायेगा।

प्रथम अध्याय – राग व रस

द्वितीय अध्याय – राग ध्यान परंपरा

तृतीय अध्याय – संगीत व धर्म का सम्बन्ध – प्रथम

(1) जैन धर्म

(2) बौद्ध धर्म

चतुर्थ अध्याय – संगीत व धर्म का सम्बन्ध – द्वितीय

(1) संतमत (सिक्ख, कबीर, संत तुलसी साहब, पलटू साहब, राधास्वामी मत)

पंचम अध्याय – राग–रस व आध्यात्मिक चेतना

षष्ठ्म अध्याय – उपसंहार

परिशिष्ट

संदर्भ ग्रन्थ सूची

पुस्तकें

1. शर्मा प्रो. स्वतन्त्र, सौन्दर्य, रस एवं संगीत, अनुभव पब्लिशिंग हाउस, सर्वोदय नगर, अललपुर, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण : 2010 पृष्ठ सं. 82
2. बावरा सिंह डॉ. जोगिन्द्र, भारतीय संगीत की उत्पत्ति एवं विकास, प्रकाशक – ए.बी.एस. पब्लिकेशन्स, मार्डेन, मार्केट जालनधर, प्रथम संस्करण – 1994
3. Mahajan, Anupam, Ragas in Hindustani Music Conceptual Aspects, Gyan Publishing, House, New Delhi – 110002
4. Deepak Raja's World of Hindustani Music: Swara, Raga & Rasa – A perspective
5. यादव डॉ. नमिता, मतंग से पूर्व राग की अवधारणा एवं विकास, अनुभव पब्लिशिंग हाउस, इलाहाबाद – 211006 प्रथम संस्करण – 2009
6. चौधरी सुभद्रा, शारंगदेवकृत संगीतरत्नाकर (सरस्वती, व्याख्या और अनुवाद सहित) प्रथम खण्ड (प्रथम अध्याय), राधा पब्लिकेशन्स, नई दिलली, प्रथम संस्करण – 2000
7. चौधरी सुभद्रा, शारंगदेवकृत संगीतरत्नाकर द्वितीय (सरस्वती व्याख्या और अनुवाद सहित) खण्ड (द्वितीय अध्याय), राधा पब्लिकेशन्स, नई दिलली, प्रथम संस्करण – 2002